Paper

The study Materials are Concerned for the PG students of VKSU, Ara (Maharaja College) Semester I, MA

Unit III

Topic — Types of Motive

प्रेरणा के प्रकार व्यक्ति के व्यवहार पर निर्भर करता है कुछ प्रेरणाएँ जन्मजात होती है तो कुछ अर्जित। जन्मजात में प्रजातीय समानता का गुण पाया जाता है तथा वे प्राकृतिक स्वभाव के होते है अर्जित प्रेरणाओं को व्यक्ति अपने अनुभव द्वारा अर्जित करता है अर्जित प्रेरणा सामाजिक एवं वैयक्तिक दो तरह के होती है सामाजिक प्रेरणाएँ सार्वजनिक होती है जो सभी व्यक्ति द्वारा समान रूप से सामाजिक अनुभव द्वारा अर्जित किए जाते है। वैयक्तिक प्रेरणाएँ व्यक्तिगत होता है। जन्मजात एवं अर्जित प्रेरणा के अन्तर्गत भी अनेक प्रेरक आते है। जो निम्नलिखित है।

जैविक प्रेरणाएँ (Biological Motives) के अन्तर्गत भूख (Hunger), प्यास (Thirst), काम (Sex), मातृत्वभाव (Maternal drive) मलोत्सर्जन (Excretion) और अन्य शारीरिक प्रेरक (Physiological Motives)

(1) भूख (Hunger) — भूख एक जन्मजात व जैविक प्रेरक है प्रत्येक व्यक्ति में यह प्रेरणा जन्म से ही पाया जाता है इसका सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के शरीर रसायन में परिवर्तन से होता है यह परिवर्तन व्यक्ति के शरीर में पोषक तत्वों की कमी को बताता है अतः व्यक्ति के शरीर में इस प्रकार का परिवर्तन शरीर में आवश्यक तत्वों की कमी के कारण उत्पन्न होता है जो भूख की प्रेरणा का प्रणोदन (drive) है जो व्यक्ति को भोजन प्राप्त करने हेतु प्रेरित करता है तथा उसे कार्यशील बनाता है यो भोजन प्राप्त करने बाद समाप्त हो जाता है

(2.) प्यास (Thirst) — व्यक्ति के शरीर में जल की कमी होने पर पानी पीने की आवश्यकता होती है भोजन के पचने से शरीर का जल उपयोग होता है शरीर के अन्य अवस्थाओं के कारण जल नष्ट होते जाता है जिससे जल का अभाव होना ही प्यास की अनुभूति है रिच्चर (Ritcher) ने अपने अध्ययन के अनुसार प्यास की अवस्था में प्राणी के व्यवहारों एवं उसके भीतर परिवर्तन को बताया है कैनन (Canon) ने मुँह और कंठ के सूखने की अनुभूति को शरीर में पानी की कमी का कारण माना है। अतः प्यास एक जैविक प्रणोदन है जिसका निर्धारण शरीर में पानी की कमी एवं इस कमी की अनुभूति से

होती है

(iii) काम प्रणोदन (Sex drive) — काम या यौन सभी प्राणियों में मिलती है जिसका प्रभाव उनके व्यवहारों पर पड़ता है लेकिन प्राणी के इन इच्छा की अभिव्यक्ति समाज द्वारा नियंत्रित होती है अतः काम-प्रेरणा एक जैविक आधारित सामाजिक प्रेरक की श्रेणी में रखा जाता है। जैविक प्रेरक सभी प्राणियों में पायी जाती है जिसकी पूर्ति शारीरिक क्रियाओं द्वारा होती है तथा संतुष्टि रसस्राव के रूप में होती है शारीरिक अंगों वैज्ञानिकों ने इसे जननेन्द्रिय में परिवर्तन (change in Sex organs) एवं गर्भाशय में परिवर्तन (change in ovaries) बताया है ~~अतः जैविक~~

(iv.) मातृत्व भाव (Maternal Drive) — यह भी एक जैविक कारक है जिसका सम्बन्ध माँ की दैहिक अवस्था से है गर्भधारण के समय से ही माँ की अतः स्तनी ग्रंथियों में परिवर्तन होने लगते हैं। पीयूष ग्रंथि से प्रोलैक्टिन ~~धर्मोन~~ हॉर्मोन (Prolactin hormone) का स्राव होने लगता है। माँ की दैहिक अवस्था में होनेवाली परिवर्तन के कारण मातृत्व भाव के लक्षण उत्पन्न होती है जिससे बच्चे की देखभाल करना, उनकी सेवा एवं स्वयं कष्ट झेलकर बच्चे को कष्ट से बचाना आदि उत्पन्न होती है। इस प्रकार मातृत्व प्रेरणा व्यक्ति को बच्चे की आवश्यकता की पूर्ति करने तथा उन्हें सुरक्षा प्रदान करने को प्रेरित करती है

(v.) मलोत्सर्जन की प्रेरणा (Excretory Drive) — मल-मूत्र का त्याग करना भी एक जैविक प्रेरणा है इस क्रिया की उत्तेजना उत्सर्जी पदार्थों से मुक्ति पाने की शारीरिक आवश्यकता है। जब मूत्राशय या मलाशय में उत्सर्जी पदार्थ जमा होते हैं तब व्यक्ति तनाव एवं दबाव का अनुभव करता है जिससे व्यक्ति तनाव या दबाव से मुक्ति पाने हेतु व्यक्ति शरीर में एकत्र उत्सर्जी पदार्थों को परित्याग करने हेतु प्रेरित होता है जिसके फलस्वरूप मलोत्सर्जन की क्रियाएँ होती है।

(vi.) अन्य शारीरिक प्रेरक (Other Physiological Motive) — हवा, पीड़ा, शारीरिक ताप निद्रा आदि समस्थिति प्रणोदनों की श्रेणी में आते हैं।

हवा — सामान्य अवस्था में इसकी कमी प्रायः नहीं देखा जाता है परन्तु किसी खास परिस्थिति में ऑक्सीजन की कमी होने पर व्यक्ति बेचैन एवं तनाव में आ जाता है और जब ऑक्सीजन को प्राप्त कर लेता है तो वह तनावमुक्त हो जाता है।

पीड़ा — पीड़ा की उत्पत्ति टिश्यूज (Tissues) के क्षति होने तथा अवयवों की कार्यप्रणाली में दोष आ जाने के कारण भी होती है।

ऐसी अवस्था में शारीरिक संतुलन बिगड़ जाती है जिसे संतुलित करने हेतु व्यक्ति एक विशेष प्रकार की क्रिया करता है।

तापमान - समस्थिति प्रणोदनों में शरीर के तापमान को सामान्य बनाये रखना भी एक प्रणोदन है।

निद्रा - यह भी एक शारीरिक समस्थिति प्रणोदन है। यह एक जैविक प्रणोदन है क्योंकि नींद की कमी होने के कारण व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ रहने लगता है।

(2) अर्जित प्रेरक (Acquired Motives) - अर्जित प्रेरकों की उत्पत्ति मनुष्य के जीवन काल में होती है। व्यक्ति अपने जीवन में अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है और उसे संचित करता है जिसके कारण व्यक्तियों में अनेक प्रकार के प्रेरक का विकास होता है।

व्यक्ति द्वारा अर्जित अनुभवों में कुछ सभी व्यक्तियों में एक समान होते हैं जिसे सार्वजनीन अर्जित प्रेरक कहते हैं। कुछ विशिष्ट अनुभव विभिन्न व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं जिसे वैयक्तिक स्वरूप का प्रेरक होता है। अतः अर्जित प्रेरक दो प्रकार के होते हैं।

1. सार्वजनिक प्रेरक (Universal acquired motive)
2. वैयक्तिक प्रेरक (Personal motive)

(1) सार्वभौमिक अर्जित प्रेरक (Universal Acquired Motive) —
सार्वभौमिक प्रेरक को सामाजिक प्रेरक भी कहा जाता है क्योंकि इन प्रेरकों का संबंध सामाजिक जीवन से रहता है और यह सभी व्यक्तियों में समान रूप से पाए जाते हैं। ऐसे प्रेरकों में
(1.) सामुदायिकता (Gregariousness)
(2.) अर्जनात्मकता (Acquisitiveness)
(3) आत्मस्थापन (Self assertion)
(4.) जिज्ञासा या उत्सुकता (Curiosity)
(5.) कलह (Pugnacity)

(1) सामुदायिकता (Gregariousness) — व्यक्तियों में स्वभाव से ही समुदाय में सामूहिक रूप से रहने की प्रवृत्ति होती है। मनुष्यों में इस भावना के विकास का कारण दूसरों पर आश्रित रहना है जब बच्चा जन्म लेता है तो वह अपने माता पिता पर आश्रित रहता है क्योंकि उनके सभी आवश्यकताओं की पूर्ति उनके द्वारा होता है परन्तु जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है तो उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति समाज में होता है। अर्थात सामाजिक ~~जीवन~~ संपर्क के माध्यम से उनमें सामाजिक जीवन की आदत सी पड़ जाती है जिससे सामुदायिकता की प्रवृत्ति का विकास होता है।

(2) अर्जनात्मकता (Acquisitiveness) — प्रायः यह देखा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति में अच्छी, लाभदायक एवं उपयोगी वस्तुओं को अपने पास रखने की प्रवृत्ति देखी जाती है। सामूहायिकता की तरह यह भी एक सार्वभौमिक प्रवृत्ति है। मैकडूगल ने व्यक्ति के इस प्रवृत्ति को अर्जनात्मकता की प्रवृत्ति की संज्ञा दी है। अर्जनात्मकता की उत्पत्ति सामाजिक परिस्थिति से उत्पन्न होता है।

(3) जिज्ञासा (Curiosity) — समाज के सभी व्यक्तियों में जिज्ञासा की भी स्वाभाविक प्रवृत्ति मिलती है। प्रत्येक प्राणी अपने आस-पास उपस्थित होने वाली नई परिस्थितियों, वस्तुओं के बारे में जानने की जिज्ञासा रखता है। इस प्रवृत्ति के विकास में सामाजिक संपर्क, अनुकरण एवं साधन की उपलब्धता आदि का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसलिए इसे अर्जित श्रेणी में रखा जाता है।

(4) आत्मस्थापन (Self-assertion) यह भी एक महत्वपूर्ण मानव प्रेरक है इसकी अभिव्यक्ति नेता बनने, दूसरों पर अपना आधिपत्य जमाना, आत्म प्रदर्शन करना आदि इच्छाओं से होता है। एडलर ने स्पष्ट किया है कि प्रत्येक व्यक्ति में इच्छा शक्ति रहती है और जब वह अपनी इच्छा शक्ति को संतुष्ट करने में सफल होता है तब उसमें श्रेष्ठ होने की भावना

उपजती है और असफल होने पर उसमें हीनता की भावना पनपती है यह भाव व्यक्ति में जन्मजात होता है।

कलह (Pugnacity) — यह प्रवृत्ति समाज के सभी व्यक्तियों में पायी जाती है। इस प्रेरणा के विकास में शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति में बाधा उपस्थित होना और शिक्षा का प्रभाव एवं अनुकरण की प्रवृत्ति का महत्वपूर्ण भूमिका है।

जब व्यक्ति की इच्छाओं की पूर्ति में बाधा उपस्थित होती है, तब वह बाधा उपस्थित करनेवाले व्यक्ति या परिस्थिति पर क्रोधित होता है। उसका क्रोध बाधा के कारणों से लड़ने के लिए उसे प्रेरित करता है लड़ने की यह प्रवृत्ति ही व्यक्तियों में कलह का संवेग उत्पन्न करता है। उसी प्रकार शिक्षण एवं अनुकरण की प्रवृत्ति भी कलह की प्रेरणा को उत्पन्न करता है। किसी खास परिस्थिति में जब हम अपने परिवार या पड़ोस के किसी व्यक्ति को झगड़ा करते हुए देखते हैं तब समान तरह की परिस्थिति उत्पन्न होने पर हम स्वयं भी वैसा ही व्यवहार करने लगते हैं।

अतः उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि कलह की प्रेरणा जीवनकाल में व्यक्ति अर्जित करता है।

(ii) वैयक्तिक मानवीय प्रेरक (Personal Human Motives) — व्यक्ति के व्यवहार एवं क्रियाओं को संचालित करने वाले कुछ ऐसे प्रेरक हैं जो वैयक्तिक स्वरूप के होते हैं। ऐसे प्रेरकों में

(1.) उपलब्धि की प्रेरणा (Achievement Motive)
(2.) आकांक्षा स्तर (Level of aspiration)
(3.) आदत की विवशता (Force of habit)
(4.) अभिरुचियाँ (Interests)
(5.) मनोवृत्ति (Attitude)
(6.) अचेतन प्रेरक (Unconcious Motive)

(1.) उपलब्धि की प्रेरणा (Achievement Motive) — व्यक्तियों में इस प्रेरणा की उत्पत्ति का आधार उनके अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करने तथा औरों से श्रेष्ठ बनने की इच्छा से होती है। मैक्लीलैंड (McClelland, 1953) ने इस प्रेरणा के विभिन्न लक्षणों अभिव्यक्ति के रूप, विकास आदि पहलुओं का अध्ययन किया है। उनके सहयोगी मनोवैज्ञानिक एटकिन्सन, विण्ट, वॉटम, क्लार्क का भी योगदान उनके साथ था। इन्होंने अपने अध्ययनों के आधार पर यह प्रमाणित किया कि इस प्रेरणा का

M T W T F S S
Page No.:
Date:
YOUVA

विकास व्यक्ति के जीवनकाल में लालन, पालन की प्रणाली, सामाजिक आर्थिक स्थिति, पारिवारिक परिवेश, सफलता एवं विफलता आदि द्वारा होता है अतः स्पष्ट है कि उपलब्धि की प्रेरणा अर्जित होती है तथा इस प्रेरणा का महत्वपूर्ण प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार पर पड़ता है।

(ii) आकांक्षा स्तर (Level of aspiration) — यह एक वैयक्तिक प्रेरक है आकांक्षा किसी लक्ष्य को प्राप्त करने की इच्छा को कहते है। यह एक प्रेरणात्मक पहलू है क्योंकि व्यक्ति की यह इच्छा उसके व्यवहार को निर्देशित करती है और व्यक्ति लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु अग्रसर एवं प्रयत्नशील रहता है। हॉप्पे (Hoppe) ने एक प्रयोग में पाया कि किसी व्यक्ति में यदि आकांक्षा स्तर और वास्तविक उपलब्धि का स्तर बराबर होता है तो व्यक्ति में सफलता की अनुभूति होती है ऐसी स्थिति में व्यक्ति का आकांक्षा स्तर ऊँचा होता है परन्तु जब आकांक्षा स्तर से वास्तविक उपलब्धि कम होती है तब व्यक्ति में निराशा का अनुभव होता है जिससे उस व्यक्ति का आकांक्षा स्तर भी घटता है।

(iii) आदत की विवशता — (Force of habit) — किसी प्रकार की आदत भी प्रेरक शक्ति का कार्य करती है जैसे किसी व्यक्ति में मादक द्रव्यों के सेवन या शराब पीने की आदत लग जाती है तो इसके फलस्वरूप व्यक्ति आदत की विवशता के कारण चैन से नहीं रह पाता है। अतः इस बेचैनी

अतः मनोवृत्ति एक मानवीय प्रेरक है जो अनुभव, शिक्षण एवं सामाजिक परिस्थिति से विकसित होता है।

(vi) अचेतन प्रेरक (Unconscious Motives) – फ्रायड (Freud) ने मानवीय प्रेरकों में अचेतन प्रेरणाओं के महत्व पर विशेष बल दिया है जिसकी पूर्ति हेतु व्यक्ति प्रयत्नशील रहता है। फ्रायड के अनुसार व्यक्ति के व्यवहार उसकी इच्छाओं पर निर्भर करता है जिसकी पूर्ति हेतु वह क्रियाशील रहता है परन्तु व्यक्ति की सभी इच्छायें पूर्ण नहीं होती है क्योंकि व्यक्ति की सभी इच्छाएं समाज के प्रचलित नियमों, आदर्शों एवं परम्पराओं के अनुरूप नहीं होती है। व्यक्ति की जो इच्छायें सामाजिक प्रतिबंधों के कारण पूर्ण नहीं होती है वे सभी इच्छायें अचेतन स्तर पर चली जाती हैं। अचेतन में दबी इच्छायें निष्क्रिय न होकर अचेतन रूप से ही व्यक्ति को कार्यशील बनाती है। अचेतन प्रेरकों द्वारा संचालित व्यवहार है बोलते समय अनजाने होने वाली गलतियाँ, किसी परिचित व्यक्ति को पहचानने में भूल करना, लिखने की भूल करना। स्वप्न भी इसका एक प्रमुख उदाहरण है। फ्रायड के अनुसार स्वप्न अचेतन प्रेरकों की अभिव्यक्ति का राही मार्ग होता है।

By
Kumar Patel
Assistant Professor
Department of Psychology
Maharaja College Ara

Dated 5/5/2020

Page 11

दूर करने के उद्देश्य से इन पदार्थों को प्राप्त करने हेतु प्रेरित होता है और जब ये पदार्थ उसे प्राप्त हो जाता है तो उसकी बेचैनी दूर हो जाती है अतः आदत की विवशता भी प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करती है।

व्यक्ति का जैसे-जैसे विकास होता है वह कुछ खास प्रकार का व्यवहार करने का आदि हो जाता है जो बाद में चलकर आदत के रूप में परिवर्तित हो जाता है परिणाम स्वरूप आदत व्यक्तियों में प्रेरकशक्ति के रूप में कार्य करने लगती है इसे व्यवहार की आदत (habit of behaviour) कहते हैं।

(iv) अभिरुचियाँ (Interest) - अभिरुचियाँ भी व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करती है इसका विकास व्यक्ति के वैयक्तिक अनुभव और परिस्थिति द्वारा होती है व्यक्ति अपने पसंद की चीजों को प्राप्त करने हेतु कार्यशील रहता है अतः व्यक्ति की अभिरुचियाँ उसे अनुकूल वस्तु प्राप्त करने हेतु प्रेरित करती है और जब व्यक्ति उसे प्राप्त कर लेता है तो प्रसन्नता का अनुभव करता है इस प्रकार अभिरुचियाँ भी मानवीय प्रेरक के रूप में काम करती है।

(v) मनोवृतियाँ (Attitudes) — किसी, व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति के प्रति व्यक्ति की मनोवृति अलग-अलग होती है और व्यक्ति अपने मनोवृति के आधार पर ही अपना सोच विकसित करता है।